UNIT-II

Date : ....

Expt. No. .... अन्तर्निरीक्षण विधि Page No. 03

1. अपूर्व विधि (Unique Method) :-

अन्तःनिरीक्षण विधि की एक विशेषता यह है कि इसमें अपूर्वता (Uniqueness) का गुण पाया जाता है। इस विधि का व्यवहार केवल मनोविज्ञान में होता है, किसी दूसरे विज्ञान में नहीं। इसी के कारण मनोविज्ञान दूसरे विज्ञानों से भिन्न हो जाता है।

2. प्रत्यक्ष विधि (Direct Method) :-

इस विधि का एक गुण यह भी है कि इसके द्वारा चेतन अनुभूति का सीधा अध्ययन सम्भव होता है। इस विधि में व्यक्ति अपनी चेतन अनुभूति के रचनात्मक तत्वों तथा गुणों का अध्ययन स्वयं करता है। यह गुण मनोविज्ञान की किसी भी दूसरी विधि में नहीं पाया जाता है।

3. संरचनात्मक विधि (Structural Method) :-

इस विधि का एक गुण यह है कि चेतन अनुभूति की रचना के अध्ययन के लिए केवल अन्तःनिरीक्षण ही सफल है। यदि हम इस बात को मान लें कि मनोविज्ञान का अध्ययन विषय चेतन अनुभूति है, तो फिर इसके अध्ययन के लिए अन्तःनिरीक्षण विधि आवश्यक बन जाती है। कारण यह है कि चेतन अनुभूति के रचनात्मक तत्वों तथा गुणों का अध्ययन इस विधि के अलावा दूसरी किसी भी विधि से संभव नहीं है।

4. सरल विधि (Simple Method) :-

इस विधि की सरलता भी इसका एक महत्वपूर्ण गुण है। इस विधि में जो कार्य विधि (Procedure) अपनायी जाती है, वह दूसरे विधियों की कार्यविधि की तुलना में सरल होती है। यहाँ व्यक्ति अपने चेतन अनुभव का खुद अध्ययन या निरीक्षण करता है, और उसे शब्दों में व्यक्त करता है।

Teacher's Signature : Dr. Gajendra Tiwari

Department of Psychology
Govt. Degree College, Baigaha
M. No - 9693082589

5. विश्वसनीय विधि (Reliable Method):-

यह विधि विश्वसनीय प्रमाणित हो सकती है, यदि व्यक्ति ईमानदारी तथा तटस्थता के साथ अपने चेतन अनुभवों का अध्ययन करे, और उनका वर्णन करे। कारण यह है कि इस विधि में व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से अपने चेतन अनुभवों का निरीक्षण करता है और उनके वास्तविक रूप से अवगत रहता है। यह दूसरी बात है कि व्यक्ति अपने अनुभवों को गलत ढंग से वर्णन करे तो यह विधि विश्वसनीय नहीं रहजायेगी

अतः स्पष्ट है कि अन्तः निरीक्षण विधि में कई तरह के गुण पाये जाते हैं। परन्तु गुणों के साथ-साथ कुछ अवगुण भी इस विधि में पाए जाते हैं। इसलिए इस विधि की उपयोगिता सीमित हो जाती है।